नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)

ऐतरेय ब्राह्मण - (1) प्रथम पंचिका 1 अध्याय में तृतीय खण्ड । (2) तृतीय पंचिका 2 अध्याय में 23-24 खण्ड।

ऐतरेय आरण्यक - 2 आरण्यक 5 अध्याय (आत्मषटक) के 3 खण्ड

ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	6 7	1 से 7 (15 वर्ग पर्यन्त) 2 (19 वर्ग से) 6	404	2086

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	य इन्द्र सोमपातमः से वयमुत्वा म पूर्व्य	206	8	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 1 अष्टक की आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) । 6. प्रतिदिन 30 मिनट अध्ययन ब्राह्मण, आरण्यक आदि ।
2	द्वितीय	वयमुत्वा से प्रकृतानि	204	8	
3	तृतीय	प्रकृतानि से त्वावतः पुरूवसो	258	8	
4	चतुर्थ	त्वावतः से आ त्वा रथं	268	8	
5	पञ्चम	आ त्वा रथं से आ प्र द्रव	195	8	
6	षष्ठ	आ प्र द्रव से इन्द्राय सामगायत	197	8	
7	सप्तम	इन्द्राय सामगायत से स्वादिष्ठया मदिष्ठया प्र देवमच्छा से धर्तादिवः धर्ता दिवः से प्र त आशवः पवमान	84 71 57	8	
8	अष्टम	प्र त आशवः से असर्जि वक्वा असर्जि से पुरोजिती	78 138	8	
9	नवम	पुरोजिती से अयं स यस्य	189	8	
10	दशम	अयं स यस्य से नि वर्तध्वं	141	8	
		ऐतरेय ब्रह्मण 1) प्रथम पञ्चिका 1 अध्याय में 3 खण्ड 2) तृतीय पञ्चिका 2 अध्याय में 23-24 खण्ड		10	
		ऐतरेय आरण्यक 2 आरण्यक 5 अध्याय (आत्मषट्क) के 3 खण्ड		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			2086 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)

ऐतरेय आरण्यक । आत्मङ्क के अवशिष्ट 3 खण्ड । (1) पदपाठ- अग्निमीळे पुरोहितम् । (2) क्रमपाठ- कद्रुदाय प्रचेतसे । (3) जटापाठ- कद्रुदाय प्रचेतसे । (4) घनपाठ-सविता पश्चातात, नवोनवो, शतं जीव शरदो

ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	7 8	7, 8 1 से 8	305	1578

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	नि वर्तध्वं से प्रमा युयुज्रे	163	9	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 1 अष्टक की आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) । 6. प्रतिदिन 30 मिनट पद, क्रम, आरण्यक इत्यादि विषयों का अध्ययन।
2	द्वितीय	प्रमा युयुज्रे से प्र होता जातः प्र होता से तां सु ते कीर्तिं	134 73	9	
3	तृतीय	तां सु ते से ये यज्ञेन दक्षिणया ये यज्ञेन से देवानां नु वयं	88 133	9	
4	चतुर्थ	देवानां नु से वि हि सोतोरसृक्षत	148	9	
5	पञ्चम	वि हि सोतो से हये जाये मनसा	160	9	
6	षष्ठ	हये जाये से उभा उ नूनं	149	9	
7	सप्तम	उभा उ नूनं से तदिदास भुवनेषु	140	9	
8	अष्टम	तदिदास से त्यं चिदत्रि	172	9	
9	नवम	त्यं चिदत्रि सम्पूर्ण अध्याय	218	9	
10	दशम	ऐतरेय आरण्यक आत्मषड्ङ्क के अवशिष्ट 3 खण्ड		9	
11		पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ, घनपाठ, (1) पदपाठ- अग्निमीळे पुरोहितम् (2) क्रमपाठ- कद्रुदाय प्रचेतसे (3) जटापाठ- कद्रुदाय प्रचेतसे (4) घनपाठ-सविता पश्चातात, नवोनवो, शतं जीव शरदः		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			1578 **मन्त्र**	100 अंक	